कुसमायोजित वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समस्याएँ : कारण एवं निराकरण का एक अध्ययन

–डॉ. वन्दना देवी श्रीवास्तव
प्रतापगढ़

सारांश

वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के समायोजन की समस्या का अध्ययन करने के लिए जनपद प्रतापगढ़ को लिया गया था। जनपद से मात्र 300 वित्तविहीन माध्यमिक शिक्षकों जिनमें 50% पुरूष तथा 50% महिला शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया था। स्वनिर्मित साक्षात्कार सूची से आंकड़ों का संकलन किया और प्रतिशत मात्रा के आधार पर कुल समायोजन समस्या के 10 कारण पहचाने गए। उक्त कारण वेतन विसंगति, भौतिक सुविधाओं की कमी, कार्य के प्रति असन्तोष, हीन भावना, अभिभावकों का हस्तक्षेप, प्रशासनिक हस्तक्षेप, गृह कलह, सम्मान का अभाव, संसाधनों का अभाव, सरकारी तन्त्र की भेदभाव पूर्ण नीति थे।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक स्वयं को ठगा सा महसूस कर रहे हैं। ऐसे शिक्षक जो सेवानिवृत्ति की आयु वर्ग में पहुँच गएहैं, उनमें भी यह भावना पाई जा रही है। वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक जिनकी आय उन्हें साइकिल की सीमा से आगे जाने की अनुमति नहीं देती वो अपने परिवार के सदस्यों को नवीन भौतिक परिवेश में किस प्रकार समायोजित कर पा रहे हैं, यह समझ पाना नामुमकिन सा है। ऐसे में वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालय का शिक्षक कुंठा और हीनभावना से ग्रसित हो रहा है। परिणामतः परिवार से लेकर विद्यालय तक सभी को इसका दुष्परिणाम झेलना पड़ रहा है।

शिक्षक वर्ग एक ऐसा समुदाय है जो समाज को एक नई चेतना, जागृति, नई क्रांति का संचार एवं स्फूर्ति प्रदान करता है किन्तु ऐसी भेदभाव पूर्ण स्थिति में जहाँ मनोबल टूट रहा है, शिक्षक अपना सर्वोत्तम आने वाली सन्तति को कैसे दे पाएगा।

इन्हीं परिस्थितियों के उधेड़–बुन में शोधकर्त्री का मन प्रस्तुत अध्ययन हेतु जिज्ञासु हुआ और प्रस्तुत कार्य प्रारम्भ किया।

उद्देश्य–वित्तविहीन माध्यमिक स्तर पर कुसमायोजित शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करना जिससे गिरते हुए मा0शि0 के स्तर को उच्च बनाया जा सके।

परिकल्पना– वित्तविहीन माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के समायोजन समस्या के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समष्टि– प्रतापगढ़ जनपद के समस्त वित्तविहीन माध्यमिक स्तर के शिक्षक ही प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या थे।

न्यादर्श– प्रतापगढ़ जनपद से कुल 300 अध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया था।

शोध–उपकरण– शोध उपकरण के रूप में शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण मापनी (स्वनिर्मित) कुसमायोजन मापनी (स्वनिर्मित), मा0 विद्यालय सम्बन्धी निरीक्षण प्रपत्र (स्वनिर्मित) का प्रयोग किया गया।

विश्लेषणात्मक सांख्यिकीय– प्रस्तुत अध्ययन में केवल प्रतिशत मात्रा की ही गणना की गयी थी।

शोध आधार– प्रस्तुत अध्ययन 50% पुरूष अध्यापक तथा 50% महिला अध्यापकों पर किया था जो कि जनपद प्रतापगढ़ के थे।

विश्लेषण एवं व्याख्या– साक्षात्कार से जो प्रतिक्रिया प्राप्त हुई उसका विवरण अधोलिखित तालिका में लिपिबद्ध है।

तालिका

वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के कुसमायोजित शिक्षकों की समस्या के प्रमुख कारणों से सम्बन्धित तालिका

क्रमांक	समस्या के प्रमुख कारण	अध्यापकों की संख्या प्रतिशत
1	वेतन विसंगति	95.88%
2	कमरों की संख्या, बरामदा, प्रधानाचार्य के लिए अलग कक्ष, चहारदीवारी की कमी	80%
3	कार्य के प्रति असन्तोष	85.10%
4	हीन भावना	88%
5	अभिभावकों का हस्तक्षेप	52.81%
6	प्रशासनिक हस्तक्षेप	72.12%
7	गृह कलह	69.48%
8	सम्मान का अभाव	85%
9	संसाधनों का अभाव	35.11%
10	सरकारी तन्त्र की भेदभाव पूर्ण नीति	92.36%

उपरोक्त तालिका के अनुसार विवरण में कुल 10 कारण विश्लेषित हैं जिनसे वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों का शिक्षक कुसमायोजित एवं कुंठा ग्रस्त है।

1. **वेतन विसंगति :–** वित्तविहीन माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों में वेतन विसंगति पर 95.88 शिक्षकों का मानना है हमारी डिग्री और योग्यता वित्त प्राप्त मा0 शिक्षकों से चाहे उत्कृष्ट ही क्यों न हो लेकिन वेतन में जमीन आसमान का अन्तर है। एक सम्मानजनक वेतन निर्धारण शैक्षिक योग्यता के अनुरूप किया जाना चाहिए ताकि शिक्षकों के मन में कुंडा घर न करें और वो अपने शिक्षण कार्य को पूर्ण मनोयोग से विर्वाह कर सकें।
2. **भौतिक सुविधाओं की कमी :–** जहाँ एक ओर जी0आई0सी0 तमाम उच्च स्तरीय भौतिक साजसामान से लैस है वहाँ दूसरी ओर वित्तविहीन मा0 विद्यालय में भौतिक सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। ऐसी परिस्थिति में पुरुष एवं महिला शिक्षकों को तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ता है जिसका प्रभाव लगभग 80% शिक्षकों पर

प्रत्यक्ष रुप से देखने को मिला जोकि समायोजन में मुख्य भूमिका के रुप में समस्या बन रहा है।

3. **कार्य के प्रति असन्तोष :–** 85.10% वित्तविहीन मा0 विद्यालयों के शिक्षकों में अपने कार्य के प्रति असन्तोष पाया गया। उनका मानना था कि वित्तविहीन विद्यालयों में इस पद पर सेवा करके कोई शिक्षक प्रगति नहीं कर सकता जबकि जी0आई0सी0 के शिक्षक अपनी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ होने के कारण निरंतर प्रगतिशील रहते हैं।

4. **हीन भावनाः–** 88% शिक्षक हीन भावना से ग्रसित पाए गए जिसमें उनका मानना है कि शैक्षिक स्तर समान होते हुए भी उन्हें अन्य नियमित सरकारी शिक्षकों की भॉति सम्मान प्राप्त नहीं होता। उन्हें अपनी सेवा समाप्ति का भी भय रहता है। अतः समायोजन में समस्या उत्पन्न होती है।

5. **अभिभावकों का हस्तक्षेप :–** 52.81% शिक्षक कहते हैं कि वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों से अभिभावक भी असन्तुष्ट रहते हैं। अभिभावकों का मानना है कि ऐसे अध्यापकों को पैसे का प्रलोभन देकर वह अपने पाल्य के लिए कुछ भी करवा सकते हैं। ऐसी सोच का सामना करने से शिक्षकों का मनोबल गिरता है और समायोजन में समस्या उत्पन्न होती है।

6. **प्रशासनिक हस्तक्षेप :–** 72.12% वित्तविहीन मा0 शिक्षकों का मानना है कि हमारे छोटे–छोटे नियमानुकूल कार्यों के लिए सरकार की भेदभाव पूर्ण नीति एवं उपेक्षात्मक व्यवहार मन में खिन्नता उत्पन्न करते हैं जिससे समायोजन में समस्या उत्पन्न होती है।

7. **गृह–कलह :–** 69.48% वित्तविहीन माध्यमिक शिक्षकों का मानना है कि वे अपने घर–परिवार एवं रिश्तेदारों इष्ट मित्रों में अपेक्षित समय एवं संसाधन नहीं दे पाते जिससे उनके घर परिवार एवं रिश्तेदार अप्रसन्न रहते हैं जिससे उन्हें अशान्ति की स्थिति से गुजरना पड़ता है फलतः कुसमायोजन की समस्या सामने आती है।

8. **सम्मान का अभाव–** 85% शिक्षकों का मानना है कि वित्तविहिन मा0 शिक्षकों को समाज में अयोग्य की श्रेणी में रखा जाता है तथा वक्त–बेवक्त समाज में खरी–खोटी सुननी पड़ती है और मानसिक सन्त्रास उत्पन्न होता है। फलतः समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है।

9. **संसाधनों का अभाव–** 35.11% शिक्षक–शिक्षिककाएं अपना मत व्यक्त करते हैं कि वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों में धनाभाव के कारण शिक्षक उचित संसाधनों की व्यवस्था नहीं कर पाते जिससे पठन–पाठन सुचारू रूप से नहीं चल पाता फलतः समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है।

10. **सरकारी तन्त्र की भेदभाव–पूर्ण नीति–** 92.36% शिक्षकों ने बताया कि समायोजन की समस्या का मुख्य कारण सरकारी तन्त्र ही है। सरकार मा0 शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर पाती क्योंकि उसके शिक्षक असंतुष्ट हैं। उनमें मानसिक विकार भरे पड़े हैं जिससे समायोजन की समस्या उत्पन्न हो रही है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वित्तविहीन मा0 विद्यालयों के शिक्षकों के समक्ष अनेक ऐसे कारक विद्यमान हैं जिससे उनमें समायोजन की समस्या उत्पन्न हो रही है। इसका प्रभाव उनके कार्य, व्यवहार एवं कक्षा–शिक्षण पर पड़ता है। चूँकि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों जिनमें

बहुधा किशोरावस्था के छात्र–छात्राएं अध्ययनरत् होते हैं में शिक्षण करने वाले शिक्षक/शिक्षिकाएं अत्यन्त धीर–गम्भीर और सामर्थ्यवान होते हैं। इनमें सहनशीलता, धैर्य तथा ज्ञान का असीम भण्डार होता है जो वसीयत के रूप में आने वाली पीढ़ी को शिक्षक सौंप देता है और यह पीढ़ी उसमें और निखार लाती है। उत्तरोत्तर स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। यह सब एक स्वस्थ विचार एवं मस्तिष्क वाला शिक्षक ही दे सकता है। अतः सरकार और समाज दोनों को चाहिए कि इन्हें इनकी स्वतन्त्रता और सम्मान दोनों को सुदृढ़ बनाने हेतु इनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने हेतु हर सम्भव प्रयास करें ताकि वित्तविहीन मा0 विद्यालयों में सेवारत शिक्षक कुसमायोजित होने से बच सके और राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. त्रिपाठी, श्रीवास्तव एवं मिश्रा 1981
2. श्रीवास्तव, शिवम् 1998: शोधग्रन्थ डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद में प्रस्तुत ग्रन्थ
3. डा0 शुक्ला गोपाल 2008 – शोध प्रबन्ध ''कुसमायोजित प्राथमिक शिक्षकों की समस्याएं : कारण एवं निराकरण'' (जनपद सुल्तानपुर के विशेष संदर्भ में)
4. चौधरी, के0के0 1957 – ''दिल्ली विश्वविद्यालय'' शिक्षकों के समायोजन का सर्वेक्षण एवं समायोजन कठिनाइयों के संभाव्य कारकों का ''अध्ययन''
5. यादव आर0एस0 1960 – ''शिक्षकों के शैक्षिक जीवन के सम्बन्ध में उनकी अभियोग्यता एवं इसका व्यावसायिक समायोजन से सम्बन्ध का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध ग्रन्थ, जबलपुर विश्वविद्यालय।